

चतुर्थोऽध्यायः

ज्ञानयोगः

● **मूल :** नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत् स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥३८॥

● **मूल :** नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत् स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥३८॥

● **सन्धिविश्लेषणपाठः**: नहि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रम् इह विद्यते।
तत् स्वयम् योगसंसिद्धः कालेन आत्मनि विन्दति ॥३८॥

● **विमन्तिः**: पवित्रमिह—पवित्रम् + इह, कालेनात्मनि—कालेन + आत्मनि।

● **अन्त्यः**: इह ज्ञानेन सदृशं पवित्रं न हि विद्यते। तत् कालेन योगसंसिद्धः आत्मनि स्वयं विन्दति।

● **प्रतिशब्दार्थः**: इह = अस्मिन् संसारे = एই संसारे, पवित्रम् = पवित्रकरणाय = परित्र करार जन्य, ज्ञानेन सदृशम् = ज्ञानेन समानम् = ज्ञानेर समान, हि = अवधारणे = निःसन्देहे, न विद्यते = न अस्ति किञ्चित् = किछुइ नेह। कालेन = कालक्रमेण = कालक्रमे, योगसंसिद्धः = कर्मयोगेन शुद्धास्तकरणः = कर्मयोगेर द्वारा शुद्धास्तःकरण हयेछे ये मान्य, स्वयम् = सः स्वयमेव = तिनि निजेह, तत् = तत् तत्त्वज्ञानम् = सेहि तत्त्वज्ञान, आत्मनि = स्वात्मनि = आत्मार मध्ये, विन्दति = अनुभवति = अनुभव करेन।

● **वस्त्रानुषादः**: एই संसारे पवित्र करार जन्य, निःसन्देहे, ज्ञानेर समान आर कोन विषयह नेह। कर्मयोगेर द्वारा शुद्धास्तःकरण हयेछेन ये वास्ति, तिनि स्वयं निजेर मध्ये एই ज्ञान अनुभव करेन।

अहङ्कार वर्जनं पूर्वक ईश्वरं निर्दिष्टं पथे तांके लाभं करेन। ताँरा अन्तरे परमं पुरुषे रे अहङ्कार वर्जनं पूर्वक ईश्वरं निर्दिष्टं पथे तांके लाभं करेन। परमात्मार मतो परमात्माविषयक ज्ञानं निराधार, निराकार। योगसिद्धं तपस्वीदेर स्वच्छं हृदये एই ज्ञानं आकारं ओ आधारं प्राप्तं हय। आर एरकम ज्ञानाकार, ज्ञानाधार तत्त्वज्ञं महात्मागणहि अर्जुनेर मतो तत्त्वज्ञज्ञासु व्यक्तिदेर उपदेशदाने सक्षम।

■ संस्कृत व्याख्या: आलोच्यः अयं श्लोकः श्रीमद्भगवद्गीतायाः 'ज्ञानयोग' नामकात् चतुर्थोऽध्यायात् उत्कलितः। अविनश्वरस्य तत्त्वज्ञानस्य प्रशंसामुखेन परमपुरुषेण श्रीकृष्णोन अयं श्लोकः उक्तः।

विश्वचराचरे ब्रह्म केवलं सद्वस्तु। ब्रह्म अन्तरेण अन्येषां वस्तु-जातानां प्रातिभासिकं सत्यत्वं विद्यमानत्वेऽपि पारमार्थिकं सत्यत्वं नास्ति। परमात्मा एकः एव सद्वस्तु अद्वितीयंश्च। परमात्मनः स्वरूपं निर्वर्ण्य अर्जुनैन उक्तं गीतायाः दशमाध्याये—

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।

पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवजं विभुम्॥ (गीता, १० १२)

ब्रह्म परमं पवित्रम्। ज्ञानं नाम ब्रह्मविषयकं परमं तत्त्वम्, ब्रह्मज्ञानम्। यथा ब्रह्म पवित्रं तथा ब्रह्मविषयकं ज्ञानमपि पवित्रम्। अस्मिन् संसारे यज्ञ-दान-तपोकर्म-व्रतोपासना-तीर्थस्नानादीनि यानि पुण्यकर्माणि सन्ति तानि सर्वाणि ब्रह्मज्ञानोपकारकानि भवन्ति। तानि सर्वाणि एव तत्त्वज्ञानसाधनानि, न तु तत्त्वज्ञानसमानानि। ममत्व-आसक्ति-फलाकाङ्क्षा-अहङ्कारवर्जनपूर्वकं यज्ञादीनां साधनेन परमात्मज्ञानं सम्पद्यते। तच्च परमात्मज्ञानं केवलं सत्यं पवित्रञ्च।

तपोयोगसाधनेन योगसंसिद्धाः तत्त्वज्ञानिनः इमं परमं पवित्रं ज्ञानं स्वान्तःकरणेषु अवधारयन्ति। ततः ते च ज्ञानिनः अर्जुनसदृशेभ्यः मुमुक्षुभ्यः परमं सत्यं ज्ञानं उपदेक्ष्यन्ति इति।

■ अन्यत्र व्याख्या: आलोच्यः अयः श्लोकः श्रीमद्भगवद्गीतायाः 'ज्ञानयोग' नामकात् चतुर्थोऽध्यायाऽउत्कलितः। अविनश्वरस्य तत्त्वज्ञानस्य प्रशंसामुखेन परमपुरुषेण श्रीकृष्णेन अयः श्लोकः उक्तः।

বিশ্চরাচরে ব্রহ্ম কেবলং সদ্বস্তু। ব্রহ্ম অন্তরেণ অন্যেষাং বস্তু জাতানাং প্রাতিভাসিকং
সত্যত্বং বিদ্যমানত্বেহপি পারমার্থিকং সত্যত্বং নাস্তি। পরমাত্মা একঃএব সদ্বস্তু অবিতীয়শ্চ।
পরমাত্মানঃ স্বরূপং নির্বর্ণ্য অর্জুনেন উক্তং গীতায়ঃ দশমাধ্যায়ে—

পরং ব্রহ্ম পরং ধাম পবিত্রং পরমং ভবান्।

পুরুষং শাশ্঵তং দিব্যমাদিদেবজং বিভূম ॥ (গীতা, ১০। ১২)

ব্রহ্ম পরমং পবিত্রম্। জ্ঞানং নাম ব্রহ্মবিষয়কং পরমং তত্ত্বম্ ব্রহ্মজ্ঞানম্। যথা ব্রহ্ম
পবিত্রং তথা ব্রহ্মবিষয়কং জ্ঞানমপি পবিত্রম্। অস্মিন্ন সংসারে
যজ্ঞ-দান-তপোকর্ম-ব্রতোপাসনা- তীর্থস্নানাদীনি যানি পুণ্যকর্মাণি সন্তি তানি সর্বাণি
ব্রহ্মজ্ঞানোপকারকানি ভবতি। তানি সর্বাণি এব তত্ত্বজ্ঞানসাধনানি, ন তু তত্ত্বজ্ঞানসমানানি।
মমত্ব-আসক্তি-ফলাকাঙ্ক্ষা- অহঙ্কারবর্জনপূর্বকং যজ্ঞাদীনাং সাধনেন পরমাত্মাজ্ঞানং
সম্পদ্যতে। তচ পরমাত্মাজ্ঞানং কেবলং সত্যং পবিত্রঞ্চ।

তপোযোগসাধনেন যোগসংসিদ্ধাঃ তত্ত্বজ্ঞানিনঃ ইমং পরমং পবিত্রং জ্ঞানং
স্বান্তঃকরণেষু অবধারযন্তি। ততঃ তে চ জ্ঞানিনঃ অর্জুনসদৃশেভ্যঃ মুমুক্ষুভ্যঃ পরমং সত্যং
জ্ঞানং উপদেক্ষ্যন্তি ইতি।

- **মূল :** শ্রদ্ধাবাল্লভতে জ্ঞানं তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিযঃ।
জ্ঞানং লব্ধ্বা পরাং শান্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি । । ৩৯ ।।
- **মূল :** **১** শ্রদ্ধাবাল্লভতে জ্ঞানং তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিযঃ।
- **মন্তব্যবিহীনসাঠ :** শ্রদ্ধাবান্ত লভতে জ্ঞানম্ তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিযঃ।
জ্ঞানম্ লব্ধ্বা পরাম্ শান্তিম অচিরেণ অধিগচ্ছতি । । ৩৯ ।।
- **বিমুক্তি :** শ্রদ্ধাবাল্লভতে—শ্রদ্ধাবান্ত + লভতে, শান্তিমচিরেণাধিগচ্ছতি—শান্তিম
+ অচিরেণ + অধিগচ্ছতি।
- **অন্তর্যামী :** শ্রদ্ধাবান্ত তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিযঃ জ্ঞানং লভতে। জ্ঞানং লব্ধ্বা অচিরেণ পরাম
শান্তিম অধিগচ্ছতি।
- **প্রতিশব্দার্থ :** তৎপরঃ = সাধনপরায়ণঃ = সাধনপরায়ণ, সংযতেন্দ্রিযঃ = জিতেন্দ্রিযঃ
= জিতেন্দ্রিয়, শ্রদ্ধাবান্ত = শ্রদ্ধাযুক্তঃ = শ্রদ্ধাবান্ত ব্যক্তি, জ্ঞানম্ = পরমাত্মাজ্ঞানম্ =
পরমাত্মাজ্ঞান, লভতে = প্রাপ্নোতি = লাভ করেন। জ্ঞানম্ = পরমাত্মাজ্ঞানম্ =
পরমাত্মাজ্ঞান, লব্ধ্বা = প্রাপ্তি = লাভ করে, পরাম শান্তিম = পারমার্থিকীং শান্তিম =



২. সংস্কৃত ব্যাখ্যা : আলোচ্যঃ অয়ং শ্লোকঃ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘জ্ঞানযোগ’ নামকাং চতুর্থোহধ্যায়ং উৎকলিতঃ। পূর্বশ্লোকেষু জ্ঞানং প্রশ্নস্য বক্ষ্যমানে শ্লোকে জ্ঞানফলং বর্ণ্যতে পরমপুরুষেণ শ্রীকৃষ্ণেন।

জ্ঞানার্জনে শ্রদ্ধা-তৎপরতা-ইন্দ্রিয়সংযমানাং একীভবনম্ আবশ্যকম্। তত্ত্ব শ্রদ্ধা নাম বেদবেদান্তাদিশাস্ত্রে, মহাপুরুষাণাং বচনামৃতেষু ঈশ্঵রে চ বিশ্বাসঃ। তত্ত্বজ্ঞানাম্ উপদেশামৃতেষু বিশ্বাসপূর্বকং ভগবদপ্রাপ্তিরূপা ভাবনা শ্রদ্ধা। শ্রদ্ধায়ঃ ক্রিয়াশীলতা এব তৎপরতা। তথা চ চক্ষুরাদীন্দ্রিয়াণাং বহিমুখীনতাং প্রতিরোধ্য অস্তমুখীকরণমেব ইন্দ্রিয়সংযমঃ।

এবং স্থিতেন শ্রদ্ধা-তৎপরতা-ইন্দ্রিয়সংযমেন যুক্তঃ মুমুক্ষুঃ প্রণিপাত-পরিপ্রশ্ন সেবাযোগেন পরমাত্মাতত্ত্বজ্ঞেভ্যঃ জ্ঞানং লক্ষ্যং সমর্থঃ। জ্ঞানলাভে শ্রদ্ধায়ঃ উপযোগিতা

শ্রীভগবতা স্বয়ং ব্যাখ্যাতা—

অশ্রদ্ধয়া হৃতং দত্তং তপস্তপ্তং কৃতঞ্চ যৎ।

অসদিত্যুচ্যতে পার্থ ন চ তৎ প্রেত্য নো ইহ।। ১। কস্তুরীয়া

তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিযঃ শ্রদ্ধাবান্মুক্ষুঃ আচার্যসাম্নিধ্যাং পরমজ্ঞানং লব্ধবা অচিরেণ পরমাং শাস্তিম্ অধিগচ্ছতি। জ্ঞানযোগেন স বৃহ্ম সাযুজ্যং চ লভতে ইতি।

দিকে যুক্ত না করলে তাঁর ক্ষাত্রধর্ম লঙ্ঘিত হবে। স্বধর্মপালন না করাও অন্যায়। কৌরবপক্ষে বিপুল সৈন্যসমাবেশে অর্জুন ভীত নন। তাঁর ভয় কল্যাণের অপ্রাপ্তিতে। মনের এই দোলাচলস্থিতিতে অর্জুন শ্রীভগবানের শরণাপন। এতদিন পর্যন্ত শ্রীকৃষ্ণের দৈবীসত্ত্বার কথা জেনেও অর্জুন তাঁর প্রতি সখার মতো আচরণ করেছেন। ভোজন-শয়ন-গমনে শ্রীকৃষ্ণ ও অর্জুন পরম্পর বন্ধুর মতো ছিলেন। কিন্তু আজ কৃষ্ণসখা অর্জুন কার্পণ্যদোষদুষ্ট ও ধর্মসংমুচ্চ। তাই উপদেশ প্রাপ্তির নিমিত্ত বন্ধু শ্রীকৃষ্ণকে তিনি গুরুর আসনে বসিয়েছেন। প্রয়োজনীয় উপদেশ ও পরামর্শ প্রাপ্তিতে শ্রীকৃষ্ণ ব্যতীত দ্বিতীয় কোন আশ্রয়ের সন্ধান অর্জুন জানেন না। তাই তিনি শ্রীকৃষ্ণের নিকট শিষ্যবুপে উপস্থিত হয়েছেন। আর শুধুমাত্র শিষ্যবুপেই নয়, তিনি শ্রীকৃষ্ণের শরণাগতও। শ্রীকৃষ্ণকে কল্যাণমূর্তি ও সমর্থ আচার্য জ্ঞান করেই অর্জুন তাঁর শরণ গ্রহণ করেছেন।

● **মূল :** কর্মণ্যেবাধিকারস্তে মা ফলেষু কদাচন।

মা কর্মফলহেতুর্ভূর্মা তে সংজ্ঞাস্ত্বকর্মণি ॥৪৭॥

● **মূল :** কর্মণ্যেবাধিকারস্তে মা ফলেষু কদাচন।

মা কর্মফলহেতুর্ভূর্মা তে সংজ্ঞাহস্ত্বকর্মণি ॥৪৭॥

● **মন্ত্রবিহীনপাঠ :** কর্মণি অধিকারঃ তে মা ফলেষু কদাচন।

মা কর্মফলহেতুঃ ভূঃ মা তে সংজ্ঞঃ অস্তু অকর্মণি ॥

● **বিমন্ত্র :** কর্মণ্যেবাধিকারস্তে—কর্মণি + এব + অধিকারঃ + তে, কর্মফলহেতুর্ভূর্মা—
কর্মফলহেতুঃ + ভূঃ + মা, সংজ্ঞাহস্ত্বকর্মণি—সংজ্ঞঃ + অস্তু + অকর্মণি।

● **অস্ত্রয় :** কর্মণি এব তে অধিকারঃ (অস্তি), ফলেষু কদাচন মা (অস্তু); কর্মফলহেতুঃ
মা ভূঃ, অকর্মণি তে সংজ্ঞ মা অস্তু।

● **প্রতিশব্দার্থ :** (অর্জুন = হে অর্জুন), তে = তব = তোমার, কর্মণি এব =
বর্ণাশ্রমবিহিতে কর্মণি কেবলম् = বর্ণাশ্রমবিহিতকর্মেই কেবল, অধিকারঃ = অধিকার
বর্ততে = অধিকার রয়েছে, ফলেষু = কর্মফলেষু = কর্মের ফলে, কদাচন = কদাপি
= কখনোই, মা = ন ভবতি = নয়, কর্মফলহেতুঃ = অথ তৎ কর্মফলস্য হেতুঃ = সে
জন্য তুমি কর্মফলের হেতু, মা ভূঃ = ন ভব = হয়ো না, (তথা চ = এবং), তে =
তব = তোমার, অকর্মণি = কর্মণাম অসম্পাদনে অপি = কর্মসম্পাদন না করাতেও,
সংজ্ঞঃ = আসক্তিঃ = আসক্তি, মা অস্তু = মা ভবতু = যেন না হয়।

● **বস্তানুযাদ :** (হে অর্জুন!) বর্ণাশ্রমবিহিত ক্ষাত্রকর্মেই কেবলমাত্র তোমার অধিকার
রয়েছে, কর্মের ফলে কখনোই নয়। সেজন্য (তুমি) কর্মফলের হেতু হয়ো না এবং

अनुसृत्य क्षात्रोचितं युद्धकर्म सम्पादयेत् । तथा स कर्मफलहेतुरपि न भवेत् । कर्मणि ममत्व-आसक्ति-अहङ्कारपोषणं कर्मफलहेतुः । अथ अर्जुनः निरासक्तः सन् ममत्वादिकं परित्यज्य शास्त्रविहितं क्षात्रकर्म युद्धं समाचरेत् इति श्रीकृष्णस्य उपदेशस्य आशयः ।

३ अंकुष्ठत व्याख्या : आलोच्यः अयং श्लोकः श्रीमद्भगवद्गीतायाः ‘सांख्ययोग’ नामकां द्वितीयोऽध्यायां उৎकलितः । अस्मिन् श्लोके भगवान् श्रीकृष्णः अर्जुनं कर्मयोगमाणित्य अनासक्तभाबेन कर्मकरणाय उपदिशति ।

कर्मणि केवलं मनुष्याणाम् अधिकारः । तत्र कर्म नाम आसक्तिं विहाय वर्णश्रमविहितं कर्मसम्पादनम् । वर्णश्रमविहितं कर्म पुण्याय भवति । किञ्चु शास्त्रनियन्त्र विहितकर्मणः असम्पादनेन च पाप भवति । फलाकाङ्क्षां परित्यज्य कर्मयोगी शास्त्रविहितं कर्म निरासक्तभाबेन सम्पादयेत् । अर्जुनः अपि अनासक्तः सन् योगविधिम् अनुसृत्य क्षात्रोचितं युद्धकर्म सम्पादयेत् । तथा स कर्मफलहेतुरपि न भवेत् । कर्मणि ममत्व-आसक्ति-अहङ्कारपोषणं कर्मफलहेतुः । अथ अर्जुनः निरासक्तः सन् ममत्वादिकं परित्यज्य शास्त्रविहितं क्षात्रकर्म युद्धं समाचरेत् इति श्रीकृष्णस्य उपदेशस्य आशयः ।

तृतीयोऽध्यायः

कर्मयोगः

● मूलः इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।

(A)

मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

● अ॒मूलः इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।

मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

● अन्तिविहीनपाठः इन्द्रियाणि पराणि आहुः इन्द्रियेभ्यः परम् मनः।

मनसः तु परा बुद्धिः यः बुद्धेः परतः तु सः ॥४२॥

● विमन्तिः पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः—पराणि + आहुः + इन्द्रियेभ्यः, मनसस्तु—मनसः + तु, बुद्धिर्यो—बुद्धिः + यः, परतस्तु—परतः + तु।

● अन्तःयः इन्द्रियाणि पराणि आहुः, इन्द्रियेभ्यः मनः परम्, मनसः तु बुद्धिः परा; यः तु बुद्धेः परतः सः (এব আত্মা)।

● अतिशब्दार्थः इन्द्रियाणि = चक्षुरादीनि इन्द्रियाणि = चक्षु प्रभृति इन्द्रिय समूह, पराणि = स्थूलशरीरात् बलवत्तराणि = स्थूल शरीर थেকে बलवान्, आहुः = उচ्यते = बলा हय, इन्द्रियेभ्यः = चक्षुरादिभ्यः इन्द्रियेभ्यः = चक्षु प्रभृति इन्द्रिय समूह थেকে, मनः = अन्तःकरणम् = मन (अन्तकरण), परम् = श्रेष्ठतरम् = श्रेष्ठতর, मनसः =

SELF MANAGEMENT IN THE GITA

৪. সংস্কৃত ব্যাখ্যা : আলোচ্যঃ অয়ং শ্লোকঃ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘কর্মযোগ’ নামকাং তৃতীয়োহধ্যায়াৎ উৎকলিতঃ। অশ্মিন् শ্লোকে পরমাত্মানঃ শ্রেষ্ঠতং ব্যাখ্যাতং পরমপুরুষেণ শ্রীকৃষ্ণেন।

(A) জ্ঞানিনঃ নিত্যশত্রুঃ অগ্নিসদৃশঃ অত্থপুঃ কামঃ পুরুষস্য জ্ঞানম্ আবৃণোতি। ধূমাবৃতঃ অগ্নিঃ মলাবৃতঃ দর্পণকশ্চ যথা প্রকাশমানঃ ন ভবতি কামেন আচ্ছাদিতং জ্ঞানমপি তথেব ন প্রকাশতে। কামঃ ইন্দ্রিয়াণি মনঃ বুদ্ধিঃ চ বশীকৃত্য জীবাত্মানং মোহিতং করোতি। স্বস্ত্রূপং বিশৃঙ্গ জীবাত্মা তদা জন্ম-মৃত্যুরূপে চক্রে পুনঃ পুনরাবর্ততে। পরমাত্মাজ্ঞানলাভায শুভবুদ্ধিনা ইন্দ্রিয়াণি বশীকৃত্য জ্ঞানবিজ্ঞানশিনঃ কামস্য মূলোচ্ছেদনং কর্তব্যম্। চিরশত্রোঃ কামস্য বিনাশে আত্মজ্ঞানমেব বলম্। আত্মা হি সর্বশ্রেষ্ঠম্। ইন্দ্রিয়াদীনি সর্বাণি অতিরিচ্য আত্মা প্রভবতি। স্থূলশরীরাং ইন্দ্রিয়াণি, ইন্দ্রিয়েভ্যঃ মনঃ, মনসঃ বুদ্ধিঃ, বুদ্ধেশ্চ আত্মা শ্রেষ্ঠঃ। আত্মানঃ শ্রেষ্ঠং ন কিঞ্চিদপি বর্ততে। আত্মানঃ পরমং কঠোপনিষদি অপি বর্ণিতম্—

ইন্দ্রিয়েভ্যঃ পরা হৃথ্যা অর্থেভ্যশ্চ পরঃ মনঃ।

মনসস্তু পরা বুদ্ধিবুদ্ধেবাত্মা মহান् পরঃ॥

পুরুষান্ন পরঃ কিঞ্চিৎ সা কাষ্ঠা সা পরা গতিঃ॥

Balanced life

সামঞ্জস্যপূর্ণ জীবন

তৃতীয়োऽধ্যায়ঃ কর্মযোগঃ

● **মূল :** নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং কর্ম জ্যাযো হ্যকর্মণঃ।

(৫) **শরীরযাত্রাপি চ তে ন প্রসিদ্ধুয়েদকর্মণঃ ॥৮॥**

● **শুল :** নিয়তং কুরু কর্ম ত্বং কর্ম জ্যায়ো হ্যকর্মণঃ।

শরীরযাত্রাপি চ তে ন প্রসিদ্ধেয়দকর্মণঃ ॥৮॥

● **অন্ধিবিহীনপাঠ :** নিয়তম্ কুরু কর্ম ত্বম্ কর্ম জ্যায়ো হ্যকর্মণঃ।

শরীরযাত্রা অপি চ তে ন প্রসিদ্ধেয়ৎ অকর্মণঃ ॥

● **বিমন্তি :** হ্যকর্মণঃ—হি + অকর্মণঃ, শরীরযাত্রাপি—শরীরযাত্রা + অপি, প্রসিদ্ধেয়দকর্মণঃ—প্রসিদ্ধেয়ৎ + অকর্মণঃ।

● **অগ্রয় :** তং নিয়তং কর্ম কুরু হি অকর্মণঃ কর্ম জ্যায়ঃ। অকর্মণঃ তে শরীরযাত্রা অপি চ তে ন প্রসিদ্ধেয়ৎ ॥

● **প্রতিশব্দার্থ :** ত্বম् = অর্জুন ত্বম् = হে অর্জুন! তুমি, নিয়তম্ = শাস্ত্রবিহিতম् = শাস্ত্রবিহিত, কর্ম = কর্তব্যকর্ম = কর্তব্যকর্ম, কুরু = ক্রিয়তাম্ = সম্পাদন কর, হি = যতঃ = যেহেতু, অকর্মণঃ = কর্মণাম্ অসম্পাদনত্বাত্ = কর্মসম্পাদন না করা থেকে, কর্ম = কর্মসম্পাদনম্ = কর্মসম্পাদন, জ্যায়ঃ = অধিকতরঃ শ্রেষ্ঠঃ = শ্রেষ্ঠতর, চ = তথা = আর, অকর্মণঃ = কর্মণাম্ অসম্পাদনাত্ = কর্মসম্পাদন না করলে, তে = তব = তোমার, শরীরযাত্রা অপি = জীবননির্বাহঃ অপি = জীবননির্বাহও, ন প্রসিদ্ধেয়ৎ =

অন্তঃ করণ যেমন শুধু হয়, তেমনি জ্ঞাত ও অজ্ঞাত পাপের প্রায়শিচ্ছিত্বও হয়। কিন্তু কর্ম ত্যাগে অন্তঃকরণের বিশুদ্ধিতা নষ্ট হয়। নিদ্রা, আলস্য ও প্রমাদের বশবর্তী হয়ে কর্মত্যাগী অধোগতি প্রাপ্ত হয়।

উদর্ধং গচ্ছন্তি সত্ত্বস্থা মধ্যে তিষ্ঠন্তি রাজসাঃ।

জঘন্য গুণবৃত্তিস্থা অধো গচ্ছন্তি তামসাঃ॥ (গীতা, ১৪। ১৮)

তাই শ্রীভগবানের উপদেশ কর্মত্যাগের চেয়ে কর্মসম্পাদনই শ্রেয়স্কর। আর নিষ্ঠামভাবে কর্তব্যকর্ম পালন করাই শ্রেষ্ঠ ধর্ম। কর্মত্যাগে মানুষ স্বাধীনভাবে বাঁচতে পারে না। শরীরকে বাঁচিয়ে রাখতে হলে মানুষের খাদ্যের প্রয়োজন। আর খাদ্যের জন্য কর্ম করতেই হয়। ফলে বিহিত কর্ম সকলকেই শ্রদ্ধার সাথে সম্পাদন করতে হবে।

১ **সংস্কৃত ব্যাখ্যা:** আলোচ্যঃ অয়ং শ্লোকঃ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ
‘কর্মযোগঃ’ নামকাত্ তৃতীযোऽধ্যায়াত্ উত্কলিতঃ। অস্মিন् শ্লোকে
শ্রীভগবতা কর্মণঃ প্রশংসা অকর্মণশ্চ নিন্দা কৃতা।

কর্তব্যকর্ম সদৈব সম্পাদনীয়ম্। কিং চ কর্ম কর্তব্যকর্ম? উচ্যতে—
শাস্ত্রবিহিত কর্ম কর্তব্যকর্ম। বর্ণাশ্রমবিহিত স্বভাবজন্য কর্ম কর্তব্যকর্ম।
কর্মময়ম্ ইদম্ জগত্। কর্মণা এব মনুষ্যাণাং প্রতিষ্ঠা সম্পদ্যতে। অথ
শ্রীভগবতা অর্জুনং প্রতি উক্তম—কর্মণ্যেবাধিকাস্তে। বিহিতকর্মণা
যথা যশঃ সম্পদ্যতে তথা বিহিতকর্মণাম্ অপ্রতিপাদনে অযশঃ সম্পদ্যতে।
অকর্ম নাম বিহিতকর্মণঃ অসম্পাদনম্। অকর্মণঃ বিহিতস্য কর্মণঃ
অসম্পাদনাত্ কর্মসাম্পাদন বরম্। কর্মণাম্ সম্পাদন
শরীরযাত্রানির্বাহৰ্থমপি প্রযোজনম্। অথ শ্রীভগবতা অর্জুনঃ উপদিষ্টঃ—
‘নিয়তং কুরু কর্ম ত্বম্’।

২ প্রস্তুত ব্যাখ্যা: আলোচ্যঃ অয়ং শ্লোকঃ শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায়ঃ ‘কর্মযোগঃ’ নামকাত্
তৃতীযোহধ্যায়াৎ উত্কলিতঃ। অস্মিন् শ্লোকে শ্রীভগবতা কর্মণঃ প্রশংসা অকর্মণশ্চ নিন্দা
কৃতা।

কর্তব্যকর্ম সদৈব সম্পাদনীয়ম্। কিং চ কর্ম কর্তব্যকর্ম? উচ্যতে—শাস্ত্রবিহিতং কর্ম
কর্তব্যকর্ম। বর্ণাশ্রমবিহিতং স্বভাবজং কর্ম কর্তব্যকর্ম। কর্মময়ম্ ইদং জগৎ। কর্মণা এব

গন্যাগাং প্রতিষ্ঠা সম্পদ্যতে। অথ শ্রীভগবতা অর্জুনং প্রতি উক্তম—কর্মণ্যেবাধিকারস্তে।
 বিহিতকর্মণা যথা যশঃ সম্পদ্যতে তথা বিহিতকর্মণাম্ অপ্রতিপাদনে অযশঃ সম্পদ্যতে।
 অকর্ম নাম বিহিতকর্মণঃ অসম্পাদনম্। অকর্মপঃ বিহিতস্য কর্মণঃ অসম্পাদনাং
 কর্মসম্পাদনং বরম্। কর্মণাম্ সম্পাদনং শরীরযাত্রানির্বাহার্থমপি প্রয়োজনম্। অথ
 শ্রীভগবতা অর্জুনঃ উপদিষ্টঃ—‘নিয়তং কৃতু কর্ম ত্তম’।